मालती जोशी की चुनी हुई कहानियों में स्त्री प्रतिरोध का स्वर

नवमी एम

शोधार्थी,

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय ,कासरगोड.

हिन्दी साहित्य जगत की प्रमुख महिला लेखिकाओं में मालती जोशी की अपनी अलग पहचान एवं स्थान है। अपने साहित्य सर्जना के माध्यम से समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को अभिव्यक्ति दी हैं। वैश्वीकरण के कारण समाज में कई परिवर्तन आये हैं। 'मूल्यच्युति' सबसे खतरनाक है और आज समाज के केंद्र में अर्थ है। पैसा, मानव मूल्य एवं व्यवहार को निर्मित कर दे रहा है। उन्होंने इन परिवर्तनों को सूक्ष्म ढंग से देखकर उसका विश्लेषण किया तथा अपनी रचनाओं में प्रस्तुति दी। वे अपनी रचना में मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री एवं उससे जुड़ी हुई गतिविधियों को विषय बनाया। आजकल स्त्री उसके ऊपर हो रहे अत्याचारों को पहचानकर आक्रोश करने लगी है जिसकी वजह से अब स्त्री शोषण पहले की तुलना में कम हो रहा है। यह प्रतिरोध का स्वर साहित्य में भी दिखाई देता है। मालती जोशी के कथा साहित्य में भावुकता है और जीवन की यथार्थता भी। सामाजिक गतिविधियों से कई मुद्दों को लेखिका ने उठाया है।

समाज में पुरुष के समान ही आधा हक स्त्री का होता है। परंपरागत अवधारणाएँ स्त्री को माता या देवी के रूप में सम्मान करने की बात स्वीकार करती है। लेकिन धीरे-धीरे स्त्री के इस आदर्शमय स्वरूप का शोषण होना आरंभ हुआ। शिक्षा पाने के बाद उसकी चेतना जागृत हुई एवं इस शोषण से बचने का रास्ता वह खुद ढूँढने लगी। अब स्त्री पहले की तुलना में बहुत आगे आ चुकी है। समय एवं संदर्भ को पहचानकर व्यवहार करने के तरीके को वह अपना रही है। सारी समस्याओं से स्वतंत्रता पाने के लिए आज की नारी प्रयासरतहै। पुरुष के स्वामित्व पर चुनौती देने की कोशिश वह कर रही है। इसलिए अन्याय के खिलाफ़ प्रतिरोध की भावना उसके चरित्र में पायी जाती है। जोशी जी की कहानियों में भी बहुत जगहों पर स्त्री का यह परिवर्तन दिखाई देता है। उन्होंने आज की जटिल परिस्थिति में तनावपूर्ण ज़िन्दगी जीने के लिए मज़बूर स्त्री जीवन से जुड़े हुए कई आयामों को उद्घाटित करने की कोशिश की है। उनकी कुछ चुनी हुई कहानियों में स्त्री प्रतिरोध का स्वर किस प्रकार दर्शाया है, इसे अभिव्यक्त करने का प्रयास मैं कर रही हूँ।

मालती जोशी का कहानी संग्रह है **'बोल री कठपुतली'**। इसकी कहानी 'रानियाँ' में नायिका वंदना है। नायक कुमार की शादी हुई है। यह बात न जानते हुए वंदना उससे प्यार करती है। कुमार भी उसे चाहता है लेकिन अंत में वंदना जानती है कि कुमार दो बच्चों के बाप हैं। तब उसे अपने आप पर तथा कुमार की पत्नी पर दया आ जाती है। वह कहती है कि -"**हम बीसवीं सदी के अंतिम छोर पर खड़े हैं। तुम कोई मध्ययुगीन सामंत नहीं हो कि रानियों की एक फौज पाल लोगे।"(93)**[1] आदिकाल से ही भारतीय समाज में किसी न किसी रूप में नारी शोषण विद्यमान था। नारी चेतना जागृत होने के बाद वह प्रतिरोध करने लगी है जो इस कथन में स्पष्ट दिखाई दे रही है। नई चेतना और नया

व्यक्तित्व उसमें उभरकर आया है। वह अपनी ताकत को सही अवसर पर प्रयोग करते हुए पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने लगी है। अब समाज के हर क्षेत्र में उसका प्रवेश हो चुका है। यहाँ तक कि राजनीति में महिलाओं के लिए तैंतीस फीसद आरक्षण का प्रावधान है। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने उसके व्यक्तित्व विकास में खूब सहारा प्रदान किया है इसलिए अपने प्रति होने वाले अन्यायों के प्रति वह विवेक के साथ विरोध करने लगी है।

'अपदस्थ' कहानी में स्त्री का आक्रोश ही दिखाई देता है। छाया के बेटेने प्रेम विवाह किया लेकिन पति बेटा और बहू को घर आने से मना करते हैं। तब छाया बताती है कि- **"यही किर्ईंट, गारे और सिमेंट से जो बनता है, वह सिर्फ मकान होता है। उसे घर की शक्ल तो औरत देती है।"(109)[2]** इसमें अपना हक माँगने वाली औरत को दिखाया गयाहै। एक घर को पूर्ण बनाने में औरत की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन समाज में उसके वजूद को अनदेखा करते हुए उसके ऊपर अत्याचार हो रहा है। घरेलू औरत जो काम करती है उसे कोई महत्व नहीं देता। बाहर जाकर कमाने वाला पुरुष के ऊपर ही सारा अधिकार होता है। इन सबका कारण पुरुष सत्तात्मक सोच विचार ही है। परंतु अब स्त्री की आत्मचेतना ने उसे सिखाया है कि घरेलू काम भी कम महत्व का नहीं है। आज कल घर में बैठते हुए 'ऑनलाइन जॉब' करने की सुविधा मौजूद है।

'ए नोन डेव्हिल' कहानी में चित्रा नायिका है। वह अकेली होकर घर में रहती है। कुमार साहब घर आकर उसे साथदेने का प्रयास करता है और चित्रा के साथ बीत गये पल में मसाला डाल कर ऑफिस वालों से बताता है। इसमें गुस्सा होकर वह कहती है कि- "**मैं अकेली ज़रूरी हूँ, बट आय एम नॉट लोनली। एंड नॉट अवेलेबल! माइंड यू।"(112)[3]** पुराने ज़माने से तुलना करते वक्त आज की स्त्री बहुत कुछ बदली हुई दिखाई देती है। अपने आपको ज्यादा परिपक्व दिखाने की कोशिश कर रही है। किसी की गुलाम बनकर नहीं, बल्कि अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए ज़िन्दगी जीना चाहती है। एकांत जीवन जीने में संकोच नहीं करती तथा किसी को साथी बनाना भी नहीं चाहती। अपनी ज़िन्दगी अपनी मर्जी से जीने में वह खुशी ढूँढती है क्योंकि औरों के पैर के नीचे अस्तित्व दबाकर रहना उसके व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में बाधा डालती है। इसलिए ऐसी प्रवृत्तियों को नकारने का प्रयास वह अब कर रही है। आधुनिक नारी की इस आत्म विकास को सटीक ढंग से लेखिका ने इसमें दिखाया है।

'मिलियन डॉलर नोट तथा अन्य कहानियाँ' संग्रह की एक कहानी है-'इंतहा -मेरे सब्र की'। मीना इसकी मुख्य पात्र है। ससुराल जाकर उसे पूरा घर सँभालना पड़ता है। वह बहुत कुछ सह लिया बाद में स्थानांतरण के द्वारा दूर कहीं जाकर रहने को सोचती है। बताती है कि- "**मैं अपने बच्चों के कुम्हलाए चेहरे नहीं देख सकती। मैं उन्हें इस कलह-क्लेशपूर्ण वातावरण से दूर ले जाना चाहती हूँ। उन्हें एक स्वच्छ-सुंदर माहौल में बड़ा करना चाहती हूँ।"(49)[4]** कर्तव्यों के बोझ से लाद रही स्त्री को अधिकारों के प्रति किस प्रकार सचेत होना है, इसकी अभिव्यक्ति हुई है। चेतना जागृत होने के बाद वह समाज में आगे बढ़ाने लगी है। किसी की प्रशंसापात्र नहीं बनना चाहती । माँ-पापा के बीच की लड़ाई बच्चों के मन को बहुत प्रभावित करतीहै। मानसिक संघर्ष झेलने के लिए वे बाध्य बनते हैं। इन सबसे बचाकर स्वतंत्र जीवन जीने का आत्मविश्वास आज की स्त्री ने पाया है। पहले स्त्री को ऐसा लगा था कि बिना पुरुष के सहारे से ज़िन्दगी बिताना निरर्थक है। इस लिए कम उम्र वाली लड़की को बूढ़े मर्द से शादी करवाती है। उस रिश्ते को

वह खुशी से निभाती भी थी। लेकिन जल्दी ही पति मर जाता है और वह वैधव्य झेलने के लिए बाध्य हो जाती है। किंतु आज शादी कब, किससे, कैसे होना है इन सारी बातों पर निर्णय लेना का अधिकार स्त्री को है। शादी के बाद उसकी मर्जी के अनुसार जी नहीं पाती तो पति से अलग रहने के लिए बिलकुल नहीं हिचकती। स्त्री की इस बदलती छवि का अंकन लेखिका ने किया है।

इस कहानी संग्रह की एक और चर्चित कहानी है 'हम बैरागी जनम के'। इला इसकी नायिका है। पापा की मृत्यु होने के बाद वह पूरा घर सँभालती है। भाई-बहन की पढ़ाई, माँ की इलाज़, बहनों की शादी आदि करते-करते वह थक जाती है। अंत में परिस्थितियों से जूझकर अकेले रहने को सोच रही है। कहती है कि- "**मैं अपने लिए सिर्फ अपने लिए जीना चाहती हूँ। हो सका तो चार पैसे जोड़ना भी शुरू कर दूँगी ताकि बूढ़ापे में अपने लिए एक मुकम्मल छत का भी इन्तज़ाम कर सकूँ।"(34)**[5] कर्तव्य को निभाने के लिए मज़बूर कई स्त्रियाँ हमारे आसपास हैं जो अपनी ज़िन्दगी का परवाह न करके दूसरों के लिए जीते-जीते मरती हैं। वह काम करते हुए सबको सँभालती है। लेकिन अब स्त्री के इस सोच में परिवर्तन आ रहा है। वह चाहने लगी कि दुनिया के रंग-बिरंगे चीज़ों का स्वाद जानना है। अकेले रहने के लिए वह नहीं हिचकती तथा हमेशा दूसरे का सहारा भी नहीं चाहती। अपनी ज़रूरतों की पूर्ति करने के लिए किसी के सामने हाथ फैलाने को वह तैयार नहीं है। वर्तमान स्त्री की इस मानसिकता का उद्घाटन लेखिका ने अपनी कहानी के द्वारा सुंदर तरीके से किया गया है।

'औरत एक रात है' संग्रह की चर्चित कहानी है 'पीर पर्वत हो गई'। इसकी नायिका निर्मल प्रदीप की पत्नी है। उसकेएक बच्चा भी है। फिर भी प्रदीप दूसरी स्त्री से प्यार करता है। निर्मल उसे छोड़कर अकेले में रहने का औरबेहिचक तलाक देने का निर्णय लेती है। बताती है कि- "**मेरी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। मेरा बी.एड पूरा हुआ जाता है। अगले सत्र में मुझे कहीं न कहीं नौकरी मिल ही जाएगी।"(110)**[6] इसमें औरत की नई चेतना दर्शनीय है। शिक्षा पाने की वजह से वह समस्या के प्रति जागरूक होने लगी है। अपनी इच्छा को बेहिचक, बिना कोई डर से निभाने में वह हिचकती नहीं है। अब जीने के लिए पुरुष का सहारा उसे अवश्य नहीं है। क्योंकि वह कामकाजी बन गई है। आधुनिक नारी का यह रूप सशक्त होता जा रहा है। पराजय स्वीकार करके चुप बैठने के लिए आधुनिक स्त्री तैयार नहीं है। समाज में कई विकृतियाँ घटित हो रही हैं। लेकिन सबको निडर होकर वह सामना कर रही है। अब स्त्री सामाजिक संघर्षों से मुक्ति पाने की कोशिश कर रही है। इसमें उसने सफलता भी हासिल की है। किसी भी कीमत पर तनावों से मुक्ति पाकर वह आगे बढ़ रही है। तलाक से डरती नहीं है बल्कि उसे स्वीकार करके आगे जाने में ही जीवन का सार्थकता समझती है। स्त्री के इस नये रूप का चित्रण लेखिका ने इस कहानी में किया है।

'पटाक्षेप' कहानी की नायिका मीरा नौकरी करने के साथ-साथ नाटक में अभिनय भी करती है। सगाई के बाद आनंद मीरा को ये सब करने से मना करता है। लेकिन मीरा गुस्से में रिश्ते को ठुकारने का निर्णय लेती है। कहती है कि- "**न मैं नौकरी छोड़ रही हूँ, न नाटक से मुँह मोड़ रही हूँ। हाँ, पर यह सगाई ज़रूर तोड़ रही हूँ। गुड बाय।"(40)**[7] आज नारी अपना आत्मसम्मान बचाकर रखना चाहती है। तानाशाही को वह पसंद नहीं करती। अपने ऊपर पाबंदी लगाने वाले इन्सान को वह चाहती नहीं है। कैरियर को प्रमुखता देकर आगे बढ़ने में वह सक्षम हुई है।

वैवाहिक जीवन को उतना महत्व भी नहीं देती। वह पहले नौकरी तलाशती है। उसके बाद शादी के बारे में सोचती है। अगर कैरियर बन पाती तो साथी की ज़रूरत भी नहीं समझती। आज की नारी स्वतंत्र, सुखपूर्ण जीवन जीने को तत्पर होती हुईदिखाई देती है। घर वालों के साथ रहकर ही नहीं सबसे अच्छा पाने के लिए दूर जाकर पढ़ाई एवं नौकरी करने को वे तैयार होती हैं। इतना आत्मबल उसने पायी है।

'बाबुल का घर' कहानी संग्रह की एक कहानी है 'चाहत'। दिलीप नायक है। उसे एक लड़की पैदा होती है। तब घर वाले सोचते हैं कि लड़की के जन्म होने से माता-पिता की कमाई सब खर्च हो जाएगी। लेकिन दिलीप की बहन कहती है कि- "**वो ज़माने लद गए जब लड़कियाँ केवल भार होती थीं। अब तो वे खुद भार उठाती है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ लेने की हकदार हैं। दोनों हाथों से भर-भरकर देती भी हैं।"(86)**[8] आजकल लड़का-लड़की के बीच का भेदभाव कम होता जा रहा है क्योंकि लड़की भी लड़कों के समान कतार में आने लगी है। सारी परेशानियों को सहकर दु:खों को मन में दबाकर रहने वाली स्त्री अब नहीं रही है। वह शोषण का प्रतिरोध करने लगी है। अत्याचार के खिलाफ बोलने के लिए बिलकुल नहीं डरती। आत्मधैर्य उसमें अब पाया जाता है। इसलिए बाल विवाह, भ्रूण हत्या जैसी समस्याएँ भी ख़त्महो रही है। क्योंकि लड़की के मन में बचपन से ही ज़िन्दगी को लेकर एक सपने का जन्म होता है। जीवन में क्या बन जाना है, किस प्रकार जीना है आदि बातों को लेकर वह चिंतित रहती है। इसलिए लड़की के जन्म के बाद होने वाले खर्च को लेकर परेशान करने की ज़रूरत माता-पिता को नहीं पड़ती। आजकल नारी के मन में साहस उत्पन्न हो गया तथा बोलने लगी कि पारिवारिक मामले में औरत के समान ज़िम्मेदारी पुरुष की भी है। इसलिए सब कुछ स्त्री के ऊपर छोड़ देना सही बात नहीं है। आधुनिक नारी जीवन में उच्च पद पर पहूँचने के लिए सक्षम होती हुई दिखाई देती है।

'हादसे और हौसले' कहानी संग्रह की कहानी है 'कोई लौटा दो मेरे'। इसमें नायिका अनुश्री पति सुबोध को छोड़कर घर आती है। ससुराल जाते समय के उसके सतरंगी सपनें, आशाएँ एवं अस्त-व्यस्त सरल-सहज विश्वास आदि कुछ दिन बाद बाद टूट गया। इसी वजह से उस रिश्ते को निभाने में वह तैयार नहीं है। पापा से अनुश्री कहती है कि- "**एक बात तय है- मैं वहाँ लौटकर नहीं जाऊंगी।"(94)**[9] अपनी आकांक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगी न मिल पाने की वजह से शादी को आसानी से ठुकराने वाली स्त्री को इसमें दिखाया है। विवाह के उपरांत आदर्श बहू बनकर जीने में ही वैवाहिक जीवन की सार्थकता नहीं मानती। वह सारा हक चाहती है। बहू के ऊपर सारी ज़िम्मेदारियों को डालकर चुप बैठे परिवार वालों को वह नहीं मानती है। वर्तमान नारी को अगर ससुराल अपना घर जैसा नहीं लगती तो बिना कोई डर या संकोच से रिश्ता ठुकराकर चली जाती है। यह समय का बदलाव है। इसे मालती जी ने अपनी रचना में अभिव्यक्ति दी हैं।

मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ संग्रह की एक कहानी है 'बहुरि अकेला'। इसकी नायिका अंजू शर्मा को दो बच्चे वाले कश्यप से शादी करनी पड़ती है। कश्यप उसे सिर्फ शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मानता है। साथ ही साथ शंका की दृष्टि से देखता भी है। इसी वजह से अंजू शर्मा शादी को तोड़ना चाहती है। वह बताती है कि- "**आज से मेरे घर का और मेरे मन का, दोनों दरवाज़े आपके लिए बंद हो चुके हैं।"(90)**[10] स्त्री चेतना इस

कथन में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। शादी के बाद शोषण झेलने के लिए विवश स्त्री सब सहकर छिपाकर नहीं जीती। सबके सामने कहती है कि उसके लिए वह रिश्ता नहीं चाहिए। सीधे तलाक माँगने का निर्णय अब लेने लगी है। शिक्षित एवं कामकाजी होने के कारण अपने जीवन जीने का तरीका वह ढूँढ लिया है। स्त्री जीवन में उत्पन्न इस परिवर्तन को सूष्म ढंग से लेखिका ने हम पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

10 प्रतिनिधि कहानियाँ' की एक कहानी है 'आस्था के आयाम'। इसमें नायिका कौमुदी के माँ-बाप वर्षों से अलग रहते हैं। वह धीरेन्द्र से प्यार करती है। लेकिन माँ-बाप अलग रहने से धीरेन्द्र के घर वाले शादी मना कर देते हैं। कौमुदी बताती है कि- "**अगर माँ मेरे अभिभावक के रूप में आपको ग्राह्य नहीं हैं तो मुझे भी यह रिश्ता मंजूर नहीं है।"(101)**[11] आज की स्वाभिमानी स्त्री के लिए अपना अलग निर्णय एवं मत है। किसी के कहने पर वह ज़िन्दगी जीना नहीं चाहती तथा हमेशा आत्माभिमान को बचाकर रहना चाहती है। सिर्फ विवाह को ही वह ज़िन्दगी की आखिरी शर्त के रूप में स्वीकार नहीं करती। आजकल पुरुष द्वारा करने वाला सारा काम स्त्री भी करने लगी है। कोई भी काम उसे कठिन महसूस नहीं होता। समाज के उच्च स्तर तक पहुँच गयी कई स्त्रियाँ जैसे कि प्रतिभा पाटिल, कल्पना चावला, कर्नम मल्लेश्वरी आदि हमारे देश में हैं जो गौरव की बात है। विवाह को ही ज़िन्दगी का आधार मानने वाले लोगों के ऊपर लेखिका ने अपना मन्तव्य रखा है।

'एक और देवदास' कहानी संग्रह की कहानी 'कुहासे' में स्वाति नायिका है। वह अजित से शादी करती है। एक बच्चा भी है किंतु सिर्फ शारीरिक आवश्यकताओं के लिए विवाहोपरांत जीवन जीने को तत्पर पति को वह छोड़ देती है। वह कहती है कि- "**दुख की की अनुभूति के लिए हृदय की आवश्यकता होती है। जो आदमी सिर्फ़ शरीर की भूख को..."(86)**[12] सभी अमानवीय व्यवहारों को झेलकर जीने वाली स्त्री अब नहीं है। पुरुष सत्तात्मक मानसिकता के शिकार बनकर आजीवन जीवन व्यतीत करने को आज की नारी तैयार नहीं होती। अपने शरीर के ऊपर मर्जी के बिना पूर्ण अधिकार जमाने के लिए वह किसी को को इज़ाजत नहीं देती तथा ऐसा करने का प्रयास किया तो अदालत तक जाने के लिए वह संकोच नहीं करती। चाहे स्त्री समाज के किसी भी स्तर से हो उच्च वर्ग से, मध्य वर्ग से या निम्न वर्ग से वह अपनी आत्म रक्षा करना सीख लिया है। लेकिन आज के ज़माने में पैसा कमाने के लिए मन मर्जी से गलत रास्ते में चलने वाली स्त्रियाँ भी हैं जो इसके लिए अपवाद है।

मालती जोशी मध्यवर्गीय नारी की क्षमता से परिचित हैं तथा कमियों को जानती भी है। पुरानी गंदी मानसिकता का विरोध करते हुए स्त्री को स्वतंत्रता दिलवाने का पूर्ण प्रयास वे अपने लेखन के माध्यम से करती हैं। उनके पात्र बदलते परिवेश के अनुरूप चलने को चाहने वाली है और वर्तमान विसंगतियों का शिकार होते हुए भी संघर्ष करने के लिए अग्रसर है। उनकी रचना में नया नैतिक बोध तथा नयी मूल्य दृष्टि दिखाई देते हैं। वैश्वीकरण के दौर में उत्पन्न आर्थिक परिस्थिति का असर मध्यवर्गीय जीवन पर कैसे हो रहा है, पारिवारिक जीवन में क्या बदलाव आया है इत्यादि विषयों को भी उन्होंने अभिव्यक्ति दी हैं। पारिवारिक रिश्तों के बीच से शुरू होकर समस्या को समाज से जुड़ने का प्रयास उन्होंने किया है। उनकी रचनाओं में परिवर्तित जीवन मूल्यों और नारी जीवन की स्थिति का यथार्थ चित्रण देखा जा सकता सकता है। ऐसे तमाम तरह के परिवेश को मालती जोशी अपनी कहानियों में बड़ी सघनता और सूक्ष्मता से

पूरी पठनीयता के साथ उकेरती हैं। कथ्य और शिल्प में सरलता और मन को छू लेने वाली क्षमता का प्रयास उनकी ओर से हुआ है। कठिनता को नकारकर सरल, सहज भाषा का इस्तेमाल वे किये हैं। इसमें स्थानीय शब्दों के साथ अलंकारिक शब्दावली का भी प्रयोग है जिससे कहानियाँ मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी बन पड़ी है। इसलिए सबको आसानी से समझ भी सकते हैं। उन्होंने खुद कहा है कि कहानियों का कथ्य कभी अपनी अनुभूति है और कभी अपनों की। इसमें अपनों की संख्या बहुत विस्तृत है। इस प्रकार मालती जोशी ने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अपनी लेखन में मज़बूती से रखकर पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के प्रतिरोध का स्वर दिखाने में सक्षम होते हुए दिखाई देती हैं। अब भी कुशल पारिवारिक जीवन बिताते हुए उनका लेखन कार्य प्रवाहमान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 'बोल री कठपुतली', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2016

2 'मिलियन डॉलर नोट तथा अन्य कहानियाँ', परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2011

3 'औरत एक रात है', परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2016

4 'बाबुल का घर', साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2017

5 'हादसे और हौसले', परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 2016

6मालती जोशी की लोकप्रिय कहानियाँ', प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली, सं. 2016

7'10 प्रधिनिधि कहानियाँ', किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं 2015

8 'एक और देवदास', साक्षी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 2016